श्रीशंकरबाबा महाराजांचा मंत्र

ॐ स्वामी समर्थ
।। श्री गणेशाय नमः।।
ॐ नमो आदेश गुरुको कमलका फुलखिले।
वैसे शंकर बाबा मन ही मन में डोले।
ज्वाला की लपटे उठे स्वर्ग में।
शंकरजी का वर खोले भाग्य का द्वार।
डम डम डमरु डम डम बाजे।
सुख का भाग्य सुभाग्य में खोले।
आठवे द्वार आठ वक्र आठ सिध्दी जावे।
बुध्दी को खोले, रिध्दी खोलकर भावे।
स्वामी तु ही माय बाप।
उंगली उठाके करे फरमान।
शंकरजी खुलाकर भाग्य।
पातलसे पोहोचावे आसमान।
दिये समान तु ही शंकर बाबा।
मै हुँ परवाना तेरी भक्ती का प्यासा।
लेके भाव रुपी मद।
गिर गिर घुमता रहे तेरे पास।
एक होऊ तेरे रुप में।
ऐसे मुढभक्ती की आस।
दिया डोलके समझावे परवाने को।
खुद जलके प्रकाश देवे सबको।

जलने का भाग्य ही है मेरा।
उसमे भी साथ देवे भक्तोंका।
शंकर बाबा बोले मै नही महान।
महान तो हैं अवलीया स्वामी का जहान।
नाम लेवे, लेत रहे दिग्गज स्वामी का।
मैं रहु पिछे हैं अरज मेरे मन का।
करता रहे सदा वायुरुपी संचारा।
भक्तोके दुर्भाग्य को झट से फटकारा।
माया का जंजालजैसे मेघो घनों का ठेला।
उसमे लगा है दु:ख ऋणो का मेला।
आई माई भाई सब तुही शंकर बाबा अकेला।
कैरी पत्तों के बीच मे कब तक रहेगी छुप।
एक ना एक दिन बाहर लायेगी संसार की धुप।
बोले शंकर बाबा लेके स्वामी का नाम।
जीवन बनावे गुरु माईका धाम।
कोटी मे कोटी महाकोटी।
महाकोटी मे सप्तद्वीप की गोटी।
ऊस पे ब्रह्मंड की लोटी।
अनंत कोटी गोटीयों का मालिक एक।
लेके हाथ में संभाले।
ना करके चुक।
होके स्वामी पीर बांधे सबकी डोर।
दंग करे भक्तों को खींचे अपनी ओर।

ज्ञान का दीप जले बुझावे जगत का घोल।
फुंके गीता बजे ज्ञानेश्वरी का ढोल।
ऐसे ज्ञानदेव को करके नमन।
झुकाके सिर होवे नमन।
समझलो ज्ञानबाबा को बुध्दी हुए गंग।
जानलो मती को स्वामी नाम में होवे दंग।
शंकर बाबा बोले हाय रे हाय माया को झाडे।
अकालमें उपरी मेघोसे अमृत वर्षा पाडे।
घडे को घडावे कुंभार।
मिट्टी को देके आकार।
शंकर बाबा घुमाके चक्कर।
स्वामी बाबा जीवन को देवे ठक्कर।
गुमसुम स्वामी मन ही मन सोचे।
शंकर भगत की लिला से आनंदरुप सागर में मौजे।
शंकर बोले बोलके स्वामी माय बाप डोले।
भक्ति रस के मस्ती में डुबे।
ऐसे मे स्वामी गण आनंदाश्रु डाले।
विचार करनेसे ही भाग्य द्वार खोले।
स्वामीजी देवे वर शंकरजी करे उसे मौल।
होके चमत्कार पथ्थर को बनावे फुल।
फुल से खिले सारा जहान।
रोग पिडा का कुवा हैं बहोत गेहरा।
बुझालो उसे शंकर स्वामी दवा देके करो मोहरा।
दुवा देके नाथो की मन खोले शांती का द्वार।

आन लेके सच्चिदानंद स्वामीबाबा की आनंद में डुबे बारंबार।
लक्ष्मी भांडार खोले।
सवारे रथ महान।
सात अश्व रथको है जोडे।
हाके माया किचड से पहुचने जन्नत दौडे।
मारे कुंची ,झाडे जहान, मोहक बनावे परिसर।
होके शंकरजी बागवान फुल फुलावे सुंदर।
ॐ श्रीम् ह्रीम् स्वामी भक्त शंकर महाराज नमो नमः।
गोल गोल गोले, डोल डोल डोले।
बोल बोल बोले, खोल खोल खोले।
खोल के भाग्य द्वार।
पहुचावे दसवे द्वार।
बैठावे शेष पर गावे भक्ती के गान।
बदन को लगावे हिना दंग करे जान।
हर एक सांस मे बैठे तुम, अमृत का प्याला पिलावे तुम।
घुम घुम घुमके करावे सुम।
झुलावे झुला देवे परमानंद।
सदा ही भगत को देवे सत का आनंद।
ऐसी लिला शंकरजी के नाव मे समाई।
स्वामीजीका लेके कृपा आशीर्वाद, भक्ति में समाई।
।। ॐ स्वामी ॐ स्वामी ॐस्वामी।।
।। हरी ॐ तत्सत्।।